॥ श्री ॥

# तिलोयपण्णत्ति

TILOYAPANNATTI

**आ. यतिवृषभ** · ३वीं शती · अभिलेख १०/९०

श्री नागहस्ति → **आ. यतिवृषभ**

## संक्षिप्त परिचय

आचार्य यतिवृषभ कृत 'त्रिलोक-प्रज्ञप्ति' — तीनों लोकों की रचना, द्वीप-समुद्र, ज्योतिष्क, नरक-स्वर्ग आदि का गणना-प्रधान प्राकृत ग्रन्थ।

जैन भूगोल-खगोल और गणित की दृष्टि से अमूल्य आकर।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

## अभिलेख-विवरण

तिलोयपण्णत्ति — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १० पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. यतिवृषभ; रचना-काल ३वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६३) के अनुसार इनका समय १४३–१७३ है तथा गुरु श्री नागहस्ति। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "कषायपाहुड" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में भगवती आराधना, रत्नकरण्ड श्रावकाचार परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

भगवती आराधना · रत्नकरण्ड श्रावकाचार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १० — मूल छायाचित्र

← मूलाचार

भगवती आराधना →